व्यापार की योजना

आय सृजन गतिविधि –मुर्गी पालन और वर्मीकंपोस्टिंग
द्वारा
नागनी माता-स्वयं सहायता समूह

एसएचजी/सीआई जी नाम	::	नागनी माता पोल्ट्री फार्म
वीएफडीएस नाम	::	फलोथा
श्रेणी	::	धर्मशाला
विभाजन	::	धर्मशाला

:

हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन एवं आजीविका सुधार परियोजना

विषयसूची

क्रम. नहीं।	विवरण	पृष्ठ/पृष्ठ
1	कार्यकारी सारांश	2-5
2	सामान्य हित समूह का विवरण	6-7
3	गांव की भौगोलिक स्थिति	8
4.	आय सृजन गतिविधि से संबंधित उत्पाद का विवरण	9
5	उत्पादन प्रक्रिया	9
6	उत्पादन योजना	10
7	विपणन	11
8	समूह के सदस्यों के बीच उद्यम का प्रबंधन	11
9	स्वोट अनालिसिस	12
10	संभावित जोखिम और उन्हें कम करने के उपाय	13
11	व्यवसाय योजना की अर्थव्यवस्था का विवरण	14
12	अर्थव्यवस्था का सारांश	15
13	अनुमान लगाना	15-16
14	लाभ लागत विश्लेषण (एक चक्र के लिए)	16-17
15	**पैसे की जरूरत**	19
	(क) वित्तीय आवश्यकता का समूह	19
	(बी) वित्तीय संसाधनों का समूह	19
16	ब्रेक ईवन पॉइंट की गणना	20
17	ऋण चुकौती के लिए किस्त योजना	21
18	कृमि खाद	22
19	उत्पादन प्रक्रिया, योजना और विपणन का विवरण	23-24
20	स्वोट अनालिसिस	25
21	अर्थशास्त्र का विवरण	26-28
22	निधि की आवश्यकता	29
23	निधि का स्रोत एवं बैंक ऋण चुकौती	30
24	निगरानी तंत्र	31
25	कुल परियोजना लागत	32
26	समूह सदस्य फोटो	33
27	अनुमोदन पत्र	34

1. परिचय

हिमाचल प्रदेश भारत के उत्तरी भाग में स्थित एक राज्य है और पश्चिमी हिमालय में स्थित है। इसकी विशेषता कई चोटियों और व्यापक नदी प्रणाली की विशेषता वाले चरम परिदृश्य हैं। हिमाचल प्रदेश को "भगवान की भूमि" के रूप में जाना जाता है और यह अपनी प्राकृतिक सुंदरता के लिए भी जाना जाता है। हिमाचल प्रदेश वनस्पतियों और जीवों से समृद्ध है।

हिमाचल प्रदेश में 12 जिले हैं और कांगड़ा राज्य के 12 प्रशासनिक जिलों में से एक है। कांगड़ा जिले को 35 प्रशासनिक उप-विभागों में विभाजित किया गया है। 2011 की जनगणना के अनुसार कांगड़ा जिले का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 5,739 वर्ग किलोमीटर है और जनसंख्या 1423794 है। जिले में 733 मीटर से लेकर 1000 फीट की ऊंचाई तक की घाटियाँ हैं। कांगड़ा जिला जालंधर दोआब से लेकर हिमालय की दक्षिणी श्रेणियों तक फैला हुआ है। यह बानेर नदी और माझी नदी के संगम पर स्थित एक शहर है और ब्यास यहाँ की एक महत्वपूर्ण नदी है।

पोल्ट्री उद्योग भारतीय कृषि में सबसे तेजी से बढ़ने वाला क्षेत्र है। अंडे प्रोटीन का एक उत्कृष्ट स्रोत होने के कारण शहरी भारतीयों के बीच तेजी से पसंदीदा बन रहे हैं, जो दुनिया में चौथा सबसे बड़ा अंडा उत्पादक है। भारत में लेयर सेगमेंट बढ़ने के लिए तैयार है और वर्तमान में इसका अनुमान 10,000 करोड़ रुपये (100 बिलियन रुपये) है। कृषि मंत्रालय के अनुसार, भारत का अंडा उत्पादन प्रति वर्ष 47.3 बिलियन अंडे होने का अनुमान है। आज, अधिक से अधिक 'अंडे के शौकीनों' के बढ़ने के साथ, अंडे की खपत सालाना 8% - 10% की दर से बढ़ रही है। यह छोटे/सीमांत किसानों और कृषि मजदूरों के लिए सहायक आय का एक महत्वपूर्ण स्रोत है। पक्षियों से प्राप्त खाद से अच्छी आय होती है।

जैविक पदार्थ। चूंकि कृषि ज्यादातर मौसमी होती है, इसलिए मुर्गी पालन के माध्यम से कई लोगों के लिए पूरे साल बढ़िया भोजन रोजगार की संभावना है। पर्याप्त बुनियादी सुविधाओं के साथ विशेष रूप से अंडे के उत्पादन के लिए और आसपास के क्षेत्रों में तेजी से लोकप्रिय हो गया है। क्षेत्र में वर्तमान मांग अधिक है। यह दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है और क्षेत्र में झुंड की वर्तमान ताकत बढ़ती मांग को पूरा करने की स्थिति में नहीं है। एकीकृत कृषि प्रणाली, संपर्क खेती, आहार और स्वास्थ्य के बारे में लोगों की जागरूकता, अन्य मांस की तुलना में पोल्ट्री मांस की लागत प्रभावशीलता, इसके अपनाने में वृद्धि शामिल है।

कम वसा सामग्री, बेहतर प्रोटीन गुणवत्ता और लोगों की जीवन शैली में बदलाव भी पोल्ट्री क्षेत्र के शानदार विकास के लिए जिम्मेदार हैं।

मुर्गीपालन के मुख्य उद्देश्य हैं: -

i) अण्डों की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए।

ii) कांगड़ा के गरीब किसानों की आय बढ़ाना।

वीएफडीएस फलोथा के 12 पुरुष सदस्यों के समूह ने मुर्गीपालन को अपनी IGA गतिविधि के रूप में चुना है। उन्होंने मुर्गीपालन का निर्णय लिया है और कुछ SHG अपने परिवार के सदस्यों की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए पहले से ही इस गतिविधि में लगे हुए हैं। अब सदस्यों ने इस गतिविधि को IGA के रूप में चुना है ताकि वे अपने खर्चों को पूरा करने के लिए अतिरिक्त पैसे कमा सकें और कठिन समय के लिए कुछ बचत भी कर सकें। विभिन्न आयु समूहों के 12 पुरुषों का एक समूह JICA परियोजना के तहत एक SHG बनाने के लिए एक साथ आया और एक व्यवसाय योजना का मसौदा तैयार करने का फैसला किया जो उन्हें इस IGA को सामूहिक रूप से लेने और अपनी अतिरिक्त आय बढ़ाने में मदद कर सके। प्रस्तावित इकाई उस भूमि के टुकड़े पर स्थित होगी जिसके लिए ग्राम पंचायत सलीहर ने इस गतिविधि को शुरू करने के लिए प्रस्ताव/एनओसी दिया और पारित किया है। साइट लगभग समतल है और पहुंच मार्ग से अच्छी तरह से जुड़ी हुई है। मुर्गीपालन के लिए बिजली एक आवश्यक घटक है क्योंकि यह चूजों के पालन-पोषण के लिए आवश्यक है और पानी की आपूर्ति के साथ-साथ क्षेत्र की रोशनी के लिए पंप का उपयोग किया जाता है। यह फार्म साइट के पास उपलब्ध है। पानी की आपूर्ति के आश्वासन के अभाव में, एक ट्यूब कुआं /हैंडपंप प्रस्तावित है। भूमिगत जल पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है तथा इसकी गुणवत्ता अच्छी है।

आवास के लिए, लेयर के मामले में 1 वर्ग फीट की दर से ब्रूडर-कम-ग्रोअर हाउस के निर्माण का प्रावधान किया गया है। इसके अलावा, फार्म में एक छोटा स्टोर रूम, कार्यालय और नौकरों के लिए क्वार्टर भी होंगे।

मकान का निर्माण पक्का होगा, छत भी पक्की होगी। घर में बिछाने के लिए घोंसले बनाने का भी

प्रावधान किया गया है। ट्यूबवेल लगाने और पाइपलाइन बिछाने का काम भी होना है।

एक दिन के व्यावसायिक संकर चूजों को पास की हैचरी से लाया जाएगा और चूजों को स्रोत पर ही मारेक रोग (एमडी) के खिलाफ टीका लगाया जाएगा। चूजों को नियमित अंतराल पर लॉट में खरीदा जाएगा।

चूजों के लिए चारा नजदीकी बाजार से खरीदा जाएगा, जहां चारा उपलब्ध है या संभव हो तो सीधे फीड कंपनी के माध्यम से उपलब्ध कराया जाएगा। इसी तरह, दवा और पशु चिकित्सा सहायता सुविधाएं नजदीकी पशु चिकित्सा विभाग से उपलब्ध कराई जाएंगी।

2.एसएचजी/सीआईजी का विवरण

2.1	एसएचजी/सीआईजी नाम	::	नागनी माता पोल्ट्री फार्म
2.2	वीएफडीएस नाम	::	फलोथा
.3	श्रेणी	::	धर्मशाला
3.4	विभाजन	::	धर्मशाला
3.5	गाँव	::	फलोथा
3.6	अवरोध पैदा करना	::	करेरी
3.7	ज़िला	::	कांगड़ा
3.8	एसएचजी में सदस्यों की कुल संख्या	::	11–महिला
3.9	गठन की तिथि	::	13-12-2022
3.10	बैंक खाता सं.	::	हिमाचल प्रदेश ग्रामीण बैंक
3.11	बैंक विवरण	::	4478001700019270
3.12	एसएचजी/सीआईजी मासिक बचत	::	चौथे दिन आयोजित होगी)
3.13	कुल बचत	::	6000
3.14	कुल अंतर-ऋण	::	-
3.15	नकद क्रेडिट सीमा	::	-
3.16	पुनर्भुगतान स्थिति	::	-

लाभार्थियों का विवरण:

क्रमांक	नाम	पद का नाम	मोबाइल नंबर
1.	संतोष देवी	प्रधान	8894035562
2.	अनु बाला	सचिव	7807550389
3	आशा देवी	केशियर	8894279829
4	कैलाशो देवी	सदस्य	8351823791
5	रुको देवी	सदस्य	9805113336
6	सीमा देवी	सदस्य	9459366276
7	वैशा देवी	सदस्य	62304486460
8	संतोष कुमारी	सदस्य	97360835536
9	पिंकी देवी	सदस्य	8894484394
10	आरती देवी	सदस्य	9736016964
11	कल्पना देवी	सदस्य	97368744494

फलोथा गांव का भौगोलिक विवरण

4.1	जिला मुख्यालय से दूरी	::	38 किमी

4.2	रेंज कार्यालय से दूरी	::	20 किमी
4.3	मुख्य सड़क से दूरी	::	10 किमी
4.4	स्थानीय बाजार का नाम एवं दूरी	::	चर्री - 10 किमी, शाहपुर - 20 किमी, धर्मशाला - 20 किमी
4.5	मुख्य बाजार का नाम एवं दूरी	::	शाहपुर -20 किमी, कांगड़ा -30, धर्मशाला - 30 किमी, चर्री - 10 किमी
4.6	मुख्य शहरों के नाम एवं दूरी	::	शाहपुर -20 किमी, कांगड़ा -30, धर्मशाला -30 किमी, चर्री - 10 किमी

4.7	उन स्थानों/स्थानों का नाम जहां उत्पाद बेचा/विपणित किया जाएगा		शाहपुर -20 किमी, कांगड़ा -30, धर्मशाला -30 किमी, चर्री - 10 किमी

4. आय सृजन गतिविधि से संबंधित उत्पाद का विवरण

1	उत्पाद का नाम		नागनी माता पोल्ट्री फार्म और वर्मीकम्पोस्टिंग
2	उत्पाद पहचान की विधि		यह गतिविधि स्वयं सहायता समूह के सदस्यों द्वारा तय की गई है। इसके अलावा, स्वयं सहायता समूह का एक सदस्य पहले से ही यह गतिविधि कर रहा है। स्थानीय बाजार में इसकी भारी मांग है जिससे अतिरिक्त आय बढ़ेगी।
3	एसएचजी/सीआईजी/क्लस्टर सदस्यों की सहमति		हाँ

5. उत्पादन योजना का विवरण:

कांगड़ा स्थित पशुपालन विभाग से मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। समूह ने निर्णय लिया है कि शुरू में चूजों का पालन किया जाएगा तथा जब वे बड़े हो जाएंगे तो उन्हें खुले व प्राकृतिक वातावरण में पाला जाएगा। इसलिए 18 सप्ताह के बाद जब चूजे 2 किलोग्राम तक का वजन प्राप्त कर लेते हैं और 6 महीने के बाद, मुर्गियां बड़ी होकर अंडे देने लगती हैं। स्थानीय बाजार में मुर्गी के मांस व अंडे की भारी मांग है। समूह के सभी सदस्यों के लिए इनका विपणन करना कोई समस्या नहीं होगी। सामूहिक रूप से काम को बांटकर स्थानीय बाजार में बिक्री करेंगे, उसके बाद ब्रायलर मुर्गी के अंडे से लेकर देसी मुर्गियों का भी विपणन करेंगे।

उत्पादन की योजना बनाना
पहला दौर:
कार्य दिवस : 365 दिन
कार्यरत व्यक्ति : **11** व्यक्ति (प्रतिदिन 2 घंटों में से 1 घंटा, सुबह और शाम को एक घंटा)
चिकन और कच्चे माल का स्रोत: चिकन और के लिए पालमपुर पोल्ट्री फार्म
अन्य समान फार्म कांगड़ा और धर्मशाला में स्थित हैं ।
अन्य संसाधनों का स्रोत: पालमपुर और कांगड़ा में स्थानीय हैचरी
आवश्यक सामग्री : 770 टुकड़े
अनुमानित उत्पादन : 11x35 = 385मुर्गियाँ तैयार होंगी
चिकन द्रव्यमान के लिए!
385 x 25 = 9625 अंडे प्रति माह
चक्र में कुल अंडा उत्पादन : 9625x 6 = 57750

6.1	समय लिया	::	ऊपरोक्त अनुसार
6.2	शामिल सदस्यों की संख्या	::	11 महिला
6.3	कच्चे माल का स्रोत	::	पालमपुर , कांगड़ा, चंडीगढ़, पशु चिकित्सा
6.4	अन्य संसाधनों का स्रोत	::	और कांगड़ा, ज्वालामुखी में स्थानीय हैचरी
6.5	उत्पादन चक्र (दिनों में) 4-5 घंटे/दिन कार्य के पश्चात 30 दिन प्रतिदिन।	::	35x 11 = 385 385 x 25 = 9225 अंडे प्रति माह
6.6	प्रति चक्र आवश्यक श्रमिक (संख्या में)	::	**कुल- 11सदस्य**

6. कच्चे माल की आवश्यकता और अनुमानित उत्पादन

1. विपणन / बिक्री का विवरण :

7.1	संभावित बाजार स्थान/स्थान	::	गांव और बाजार- चार्री , शाहपुर और, रैत , कांगड़ा , धर्मशाला
7.2	माँग	::	पूरे वर्ष और त्यौहारों तथा विवाह के समय उच्च मांग अवसर.
7.3	बाजार की पहचान की प्रक्रिया	::	समूह के सदस्य संपर्क करेंगे आस-पास के ग्रामीण/घर/रेस्तरां और होटल।
7.4	विपणन रणनीति	::	कवर किए गए गांव - फलोथा , चर्री , शाहपुर और रैत
7.5	उत्पाद का ब्रांड	::	फलोथा पोल्ट्री

2. समूह के सदस्यों के बीच प्रबंधन का विवरण:

- प्रबंधन के लिए नियम बनाये जायेंगे।
- समूह के सदस्य आपसी सहमति से कार्यों का वितरण करेंगे।
- आबंटन कार्य की दक्षता एवं क्षमता के आधार पर किया जाएगा।
- लाभ का वितरण भी कार्य की गुणवत्ता, कौशल एवं परिश्रम के आधार पर किया जाएगा।
- मार्केटिंग में अनुभव रखने वाले 04 सदस्य बारी-बारी से मार्केटिंग करेंगे।
- प्रधान और सचिव उसी समय प्रबंधन का मूल्यांकन और निरीक्षण करते रहेंगे।

3. ग्राहकों

हमारे केंद्र के प्राथमिक ग्राहक ज्यादातर स्थानीय लोग, फलोथा , चर्री और शाहपुर गांवों के आसपास के रेस्तरां और होटल होंगे , लेकिन बाद में इस व्यवसाय को आस-पास के छोटे कस्बों में भी पहुंचाया जा सकता है।

केंद्र का लक्ष्य

केंद्र का मुख्य उद्देश्य विशेष रूप से बलेहरा गांव के निवासियों और आसपास के गांवों के सभी निवासियों को उच्च गुणवत्ता वाले और ताजे अंडे और मुर्गियां उपलब्ध कराना है।

यह केंद्र आने वाले वर्षों में अपने परिचालन क्षेत्र में गुणवत्तापूर्ण कार्य के साथ सबसे प्रतिष्ठित पोल्ट्री फार्म बन जाएगा।

4. स्वोट अनालिसिस

❖ ताकत

- मुर्गीपालन में ऐसे राष्ट्र की प्रोटीन आवश्यकताओं को पूरा करने की क्षमता है, जहां कुपोषण व्याप्त है - क्योंकि अंडे/ब्रॉयलर दोनों ही प्रोटीन का अच्छा स्रोत हैं।
- ग्रामीण जनता की आय बढ़ाने में मदद करता है। इस प्रकार ग्रामीण आबादी की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में सुधार होता है।
- पोल्ट्री, पौधों के उत्पादों/ अपशिष्टों को खाद्य पदार्थों में परिवर्तित करने के सबसे कुशल तरीकों में से एक है , जो विशेष रूप से भारत जैसे देश में कुपोषण की समस्या से कुछ हद तक निपट सकता है।

अन्य मांस (गोमांस, सूअर) के विपरीत, जिन पर धार्मिक प्रतिबंध हैं , चिकन भारत में व्यापक रूप से स्वीकार किया जाता है और यह बकरी के मांस से सस्ता है।

- पोल्ट्री कूड़े में उच्च खाद मूल्य होता है और इसका उपयोग कृषि गतिविधियों में किया जा सकता है।

इसमें गैर-कृषि रोजगार सृजित करने और ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी क्षेत्रों की ओर पलायन को रोकने की क्षमता है।

- कम निवेश आवश्यकताओं के साथ अपेक्षाकृत त्वरित रिटर्न उत्पन्न करता है।

❖ कमजोरी

- मुर्गीपालन श्रम प्रधान है।
- पोल्ट्री उद्योग की एक विशेष विशेषता यह है कि यह अत्यधिक विखंडित है

खराब परिवहन, बुनियादी ढांचे और कोल्ड चेन सुविधाओं की कमी वर्तमान में शीतित या जमे हुए उत्पादों की महत्वपूर्ण मात्रा को संभालने की व्यवहार्यता को सीमित करती है ।

- कम उत्पादन लागत के साथ-साथ शेड, फीडर, ब्रीडर, हीटिंग और कूलिंग सिस्टम जैसे बुनियादी ढांचे में निवेश की लागत के कारण किसानों की आय कम हो जाती है।

मानदंड (अधिकांश क्षेत्राधिकार संबंधों में केवल 5% मृत्यु दर की अनुमति है - अन्यथा किसान को दंडित किया जाता है और कम दर की पेशकश की जाती है) किसानों को असुरक्षित स्थिति में छोड़ देता है और उनके पास अपनी शिकायतें व्यक्त करने का कोई रास्ता नहीं होता है।

❖ अवसर

- वर्तमान में प्रति व्यक्ति अन्य मांस (बीफ़, पोर्क) के विपरीत, जिन पर धार्मिक प्रतिबंध हैं- चिकन भारत में व्यापक रूप से स्वीकार किया जाता है और बकरी के मांस से सस्ता है।

भारत में खपत दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है, इसलिए मुर्गी पालन के लिए बड़ी गुंजाइश है। इसके अलावा, भारत में अंतर्राष्ट्रीय बाजार का दोहन करने की भी काफी क्षमता है। संतुलित पोषण की आवश्यकता के बारे में बढ़ती जागरूकता के कारण खाने की आदतों में बदलाव आया है और अन्य सभी की तुलना में शाकाहारियों ने अंडे को अपने आहार का हिस्सा बना लिया है।

खतरे/जोखिम

प्राकृतिक आपदाएँ

यदि पर्याप्त स्वास्थ्य सावधानियाँ नहीं बरती जाती हैं तो संक्रामक/संक्रामक बीमारियाँ फैलसकती हैं। हाल ही में एवियन फ्लू ने दुनिया भर में दहशत की लहर फैला दी है। पोल्ट्री उद्योग को प्रभावित करने वाले अन्य पहलू हाल ही में सार्स और इबोला तथा तपेदिक और मलेरिया जैसी पुरानी बीमारियाँ हैं।

- मुख्य खाद्य सामग्री यानी मक्का की कमी, जो कि खाद्य राशन का 65% से अधिक है। इसलिए, लागत में वृद्धि से लाभ भी खत्म हो सकता है।

5. संभावित चुनौतियों का विवरण और उन्हें कम करने के उपाय:

क्रमांक	जोखिमों का विवरण	::	जोखिम न्यूनीकरण के उपाय
6.1	यह संभव है कि बाजार में मांग कम हो जाए, जिससे बिक्री और उत्पादन पर असर पड़े। आय।	::	विपणन उद्देश्य के लिए अतिरिक्त बाजार की खोज की जानी चाहिए।
6.2	की गुणवत्ता में गिरावट के कारण बिक्री कम हो सकती है।	::	उत्पाद की गुणवत्ता बनाए रखने के लिए स्वयं सहायता समूह के सदस्यों को सख्त दिशानिर्देशों का पालन करना होगा।

6. मशीनरी, औजार और अन्य उपकरण

क. मूल बातें और पूर्वधारणाएं

क्रमांक।	विवरण	इकाई	मात्रा
I.	**तकनीकी-आर्थिक मापदंड**		
1	पक्षियों की संख्या	नहीं।	770
2	प्रति वर्ष बैच	नहीं।	2
3	बैच का आकार	संख्या.	360
4	अंडे देने के लिए विचारित पक्षी	संख्या.	360
5	वध हेतु विचारित पक्षी	संख्या.	360
6	ब्रूडिंग एवं वृद्धि अवधि (सप्ताह में)		20
7	अंडे देने की अवधि सप्ताहों में		52
8	आवास का प्रकार		गहरा कूड़ा
9	ब्रूडर सह ग्रोवर हाउस में प्रति पक्षी आवश्यक स्थान	वर्ग फुट	1
10	लेयर शेड में प्रति पक्षी फर्श स्थान (पिंजरा प्रणाली)	वर्ग फुट	0.8
11	पुनर्भुगतान की अवधि	वर्ष	5
12	बैंक ऋण के लिए ब्याज दर	%	12
II.	**व्यय मानदंड**		

1	ब्रूडर सह ग्रोवर शेड के निर्माण की लागत	रु./वर्ग फीट	125
2	लेयर शेड के निर्माण की लागत	रु./वर्ग फीट	140
3	स्टोर रूम के निर्माण की लागत	रु./वर्ग फीट	250
4	लेयर्स के लिए पिंजरों की लागत	रु./पक्षी	90
5	फीडर , पानी और ड्रेसिंग उपकरण	रु.	20
6	एक दिन के चूज़ों की कीमत	रु./पक्षी	40
7	अंडे देने के दौरान आहार की आवश्यकता - 52 सप्ताह अंडे देने के दौरान	रु./पक्षी	21
8	उत्पादकों के दौरान आहार की आवश्यकता - 20 सप्ताह	रु./पक्षी	6
9	चिक/ग्रोवर मैश	रु./किग्रा	14
10	लेयर मैश की लागत	रु./किग्रा	12
11	दवा, टीका, श्रम एवं विविध शुल्क	रु./पक्षी	8
12	बीमा	रु./पक्षी	1
III. आय मानदंड			
1	प्रति पक्षी उत्पादित अंडों की संख्या	प्रति चक्र अंडे	120
2	अंडे का विक्रय मूल्य	रु./अंडा	10
3	मारे गए पक्षियों का विक्रय मूल्य	रु./पक्षी	700
4	खाद एवं बोरियों से आय	रु./पक्षी	44

एक।	**पूंजीगत लागत**			
क्रमांक।	**का विवरण मशीनरी.**	**मात्रा**	**दर प्रति इकाई**	**कुल मात्रा**
1.	आवास की लागत (1 वर्ग फीट/पक्षी) (60*9=540 वर्ग फीट)	770	250	192500
2.	कुरोइलर चूजों की कीमत (दिन पुराना)	770	35	26950
3.	ब्रूडर सह ग्रोवर उपकरण	770	40	30800
4.	घर बनाना	770	75	57750
5.	जल आपूर्ति प्रणाली	रास	रास	12000
	कुल			**320000**

बी।	**आवर्ती लागत**

क्रमांक	विवरण	इकाई	मात्रा	प्रति यूनिट दर(रु.)	राशि (रु.)
1	पहले दो बैचों के लिए उत्पादक चारा	क्यूटीएल.	11	2600	28600
2	चूजों को 1 से 4 सप्ताह तक आहार दें	क्यूटीएल.	4	3000	12000
3	लेयर मछलियाँ 20 से 52 सप्ताह तक भोजन करती हैं	क्यूटीएल.	20	2700	54000
.4	अंडे की पैकिंग/ट्रे	संख्या	2400	5	12000
5	चिकित्सा, टीका, श्रम और विविध प्रभार	रुपये/पक्षी	500	10	5000
6	सवारी डिब्बा/ परिवहन	रास	रास	रास	15000
7	**बीमा**	%	500	1	500
	कुल				**127100**

बी। आवर्ती लागत

क्रमांक	विवरण	इकाई	मात्रा	प्रति यूनिट दर (रु.)	राशि (रु.)
1	पहले दो बैचों के लिए उत्पादक चारा	क्यूटीएल.	11	2600	28600
2	चूजों को 1 से 4 सप्ताह तक आहार दें	क्यूटीएल.	4	3000	12000
3	लेयर मछलियाँ 20 से 52 सप्ताह तक भोजन करती हैं	क्यूटीएल.	20	2700	54000
.4	अंडे की पैकिंग/ट्रे	संख्या	2400	5	12000
5	चिकित्सा, टीका, श्रम और विविध प्रभार	रुपये/पक्षी	500	10	5000
6	सवारी डिब्बा/ परिवहन	रास	रास	रास	15000
7	**बीमा**	%	500	1	500
	कुल				**127100**

7. म

हीने में कुल उत्पादन और बिक्री राशि चूंकि यह SHG में उनके नियमित घरेलू काम के अलावा एक अतिरिक्त गतिविधि है, इसलिए परिणाम प्रत्येक सदस्य के कार्य घंटों के अनुपात में होगा। हमेशा शुरुआत में उत्पादन को रूढ़िवादी पक्ष पर रखना बेहतर होता है जिसे हमेशा समय बीतने और कार्य अनुभव के साथ बढ़ाया जा सकता है।

8. 1

चक्र में कुल उत्पादन मात्रा और बिक्री मात्रा

सी)	कुल बिक्री			
क्रमांक	विशिष्ट	मात्रा	दर (रु.)	राशि (रु.)
1	अंडे	57750	10	577500
2	मांस/चिकन	385	700	269500
	कुल (सी)			847000

विवरण	**कुल राशि (रु.)**	**परियोजना योगदान (75%)**	**एसएचजी योगदान (25%)**
कुल पूंजी लागत	320000	240000	80000
आवर्ती लागत	**127100**	**-**	**127100**
कुल	**447100**	**240000**	**207100**

240000 रुपये की राशि परियोजना सहायता है इसलिए गणना के उद्देश्य से इस राशि को व्यय कॉलम से सुरक्षित रूप से घटाया जा सकता है और शुद्ध आय को फिर से फिर से डाला जा सकता है। इसके अलावा, SHG के सदस्य सामूहिक रूप से काम करेंगे इसलिए उनकी मजदूरी को ध्यान में नहीं रखा गया है। महीने के अंत में शुद्ध आय को निम्नानुसार फिर से डाला जाता है:

पूंजीगत लागत		
ब्योरा	**मात्रा**	**स्वयं सहायता समूह योगदान**

पूंजीगत लागत	320000	207100
आवर्ती व्यय		
i) 10% मूल्यह्रास पूंजीगत लागत प्रतिवर्ष	20775	
ii) सामग्री लागत आदि पर अन्य व्यय ।	129700	
कुल	150475	
कुल लागत	**150475+207100=357575**	
सट में कुल बिक्री चक्र	**847000**	
शुद्ध लाभ	**489425**	

9. लाभ का बंटवारा

स्वयं सहायता समूह के सदस्यों ने आपसी सहमति से यह निर्णय लिया है कि प्रथम चक्र में प्रत्येक सदस्य को 26311 रुपये आय के रूप में दिए जाएंगे तथा शेष 200000 रुपये का लाभ उनके बैंक खाते में आपातकालीन आरक्षित निधि के रूप में रखा जाएगा, ताकि भविष्य में किसी आकस्मिक आवश्यकता की पूर्ति की जा सके।

10.में निधि प्रवाह :

विवरण	कुल राशि (रु.)	परियोजना योगदान (75%)	एसएचजी योगदान (25%)
कुल पूंजी लागत	320000	240000	80000
आवर्ती लागत	**127100**	**-**	**127100**
प्रशिक्षण	**50000**	**50000**	
कुल	**497100**	**290000**	**207100**

टिप्पणी-

- **पूंजीगत लागत** - कुल पूंजीगत लागत का 75% परियोजना द्वारा वहन किया जाएगा
- **आवर्ती लागत –** सम्पूर्ण लागत SHG/CIG द्वारा वहन की जाएगी।
- **प्रशिक्षण/क्षमता निर्माण/कौशल उन्नयन-** कुल लागत परियोजना द्वारा वहन की जाएगी

8. के स्रोत और खरीद:

परियोजना समर्थन;	• पूंजीगत लागत का 75% उत्पाद की खरीद के लिए उपयोग किया जाएगा। • स्वयं सहायता समूह के बैंक खाते में एक लाख रुपये तक की धनराशि परिक्रामी निधि के रूप में जमा की जाएगी। • प्रशिक्षण/क्षमता निर्माण/कौशल उन्नयन लागत।	सभी कोडल औपचारिकताओं का पालन करने के बाद मशीनों की खरीद संबंधित डीएमयू/एफसीसीयू द्वारा की जाएगी।
स्वयं सहायता समूह योगदान	• पूंजीगत लागत का 25% हिस्सा स्वयं सहायता समूह द्वारा वहन किया जाएगा। • स्वयं सहायता समूह द्वारा वहन की जाएगी	

9. प्रशिक्षण/क्षमता निर्माण/कौशल उन्नयन

प्रशिक्षण/क्षमता निर्माण/कौशल उन्नयन की लागत परियोजना द्वारा वहन की जाएगी।

निम्नलिखित कुछ प्रशिक्षण/क्षमता निर्माण/कौशल उन्नयन प्रस्तावित/आवश्यक हैं:

- टीम वर्क
- गुणवत्ता नियंत्रण
- पैकेजिंग और विपणन
- वित्तीय प्रबंधन

10. ऋण चुकौती अनुसूची-

यदि ऋण बैंक से लिया गया है तो यह नकद ऋण सीमा के रूप में होगा और सीसीएल के लिए कोई पुनर्भुगतान अनुसूची नहीं है; हालांकि, सदस्यों से मासिक बचत और पुनर्भुगतान रसीद सीसीएल के माध्यम से प्राप्त की जानी चाहिए।

- सीसीएल में, एसएचजी के बकाया मूल ऋण का भुगतान वर्ष मेंं एक बार बैंकों को किया जाना चाहिए। ब्याज राशि का भुगतान मासिक आधार पर किया जाना चाहिए।
- सावधि ऋणों में, पुनर्भुगतान बैंकों में निर्धारित पुनर्भुगतान अनुसूची के अनुसार किया जाना चाहिए।

11. निगरानी विधि–

- वीएफडीएस की सामाजिक लेखा परीक्षा समिति आईजीए की प्रगति और निष्पादन की निगरानी करेगी तथा प्रक्षेपण के अनुसार इकाई का संचालन सुनिश्चित करने के लिए आवश्यकता पड़ने पर सुधारात्मक कार्रवाई का सुझाव देगी।
- स्वयं सहायता समूह को प्रत्येक सदस्य की आईजीए की प्रगति और निष्पादन की भी समीक्षा करनी चाहिए तथा यदि आवश्यक हो तो सुधारात्मक कार्रवाई का सुझाव देना चाहिए ताकि इकाई का संचालन अनुमान के अनुसार सुनिश्चित हो सके।

पृष्ठभूमि

वर्मीकंपोस्टिंग सरल उत्पादन तकनीक, पारिस्थितिकी, आर्थिक और मानव स्वास्थ्य से जुड़े लाभों के कारण देश में मजबूती से पैर जमा रहा है। उद्यमियों द्वारा सरकारी सहायता/गैर-सरकारी संगठनों (एनजीओ) के तकनीकी मार्गदर्शन में, विशेष रूप से देश के दक्षिणी और मध्य भागों में, बड़ी संख्या में वर्मीकंपोस्टिंग इकाइयाँ स्थापित की गई हैं।

वर्मीकंपोस्टिंग के प्रत्यक्ष पर्यावरणीय और आर्थिक लाभ हैं क्योंकि यह स्थायी कृषि उत्पादन और किसानों की आय में महत्वपूर्ण योगदान देता है। कई गैर सरकारी संगठन, समुदाय आधारित संगठन (सीबीओ), स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) , ट्रस्ट आदि हैं जो इसके स्थापित आर्थिक और पर्यावरणीय लाभों के कारण वर्मीकंपोस्टिंग तकनीक को बढ़ावा देने के लिए ठोस प्रयास कर रहे हैं।

वर्मी कम्पोस्ट

केंचुओं के पालन/उपयोग के माध्यम से खाद का उत्पादन वर्मिन कम्पोस्टिंग तकनीक कहलाता है। इस तकनीक के तहत केंचुए बायोमास खाते हैं और इसे पचाए गए रूप में उत्सर्जित करते हैं जिसे वर्मी कम्पोस्टिंग कहते हैं। कम्पोस्ट या वर्मिन कम्पोस्ट। यह छोटे और बड़े दोनों तरह के किसानों के लिए कम्पोस्ट बनाने के सबसे सरल और लागत प्रभावी तरीकों में से एक है। वर्मी कम्पोस्ट उत्पादन इकाई किसी भी ऐसी भूमि पर स्थापित की जा सकती है जो किसी आर्थिक उपयोग में न हो, लेकिन छायादार और पानी के ठहराव से मुक्त हो। साइट जल संसाधन के नज़दीक भी होनी चाहिए

वर्मीकंपोस्टिग , जिसे सही मायने में "कचरे से सोना" कहा जाता है, जैविक कृषि उत्पादन में प्रमुख इनपुट है। सरल तकनीक के कारण, कई किसान वर्मीकंपोस्टिंग उत्पादन में लगे हुए हैं क्योंकि यह मिट्टी के स्वास्थ्य को मजबूत करता है; मिट्टी की उत्पादकता जिससे खेती की लागत कम हो जाती है।

पोषक तत्वों की उच्च मात्रा के कारण वर्मी कम्पोस्ट की मांग में धीरे-धीरे वृद्धि हो रही है।

5. उत्पादन प्रक्रियाओं का विवरण

कदम		विवरण
स्टेप 1	::	प्रसंस्करण में अपशिष्टों का संग्रह, कतरना, धातु, कांच और चीनी मिट्टी का यांत्रिक पृथक्करण और जैविक अपशिष्टों का भंडारण।

चरण दो	::	बीस दिनों तक जैविक अपशिष्ट का पूर्व पाचन सामग्री को मवेशियों के गोबर के घोल के साथ ढेर करना । यह प्रक्रिया आंशिक रूप से सामग्री को पचाती है और इसके लिए उपयुक्त है केंचुआ खपत। मवेशियों का गोबर और बायोगैस घोल जा सकता है । गीले गोबर का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए के लिए वर्मी -कम्पोस्ट उत्पादन.
चरण-3	::	की तैयारी । एक ठोस आधार है वर्मी -कम्पोस्ट के लिए अपशिष्ट डालना आवश्यक है तैयारी । ढीली मिट्टी कीड़ों को अंदर जाने देगी मिट्टी और पानी देते समय भी; सभी घुलनशील पोषक तत्व पानी के साथ मिट्टी में चले जाते हैं ।
चरण 4	::	वर्मी -कम्पोस्ट के बाद केंचुओं का संग्रहण संग्रह । खाद सामग्री को अलग करने के लिए छानना पूरी तरह से खाद बनी सामग्री। आंशिक रूप से खाद बनी सामग्री सामग्री को पुनः वर्मी -कम्पोस्ट बेड में डाल दिया जाएगा ।

कदम		विवरण
चरण-5	::	वर्मी -कम्पोस्ट को उचित स्थान पर संग्रहित करना नमी बनाए रखें और लाभकारी सूक्ष्मजीवों को पनपने दें बढ़ना ।

6. उत्पादन योजना का विवरण

6.1	उत्पादन चक्र (दिनों में)	::	90 दिन (एक वर्ष में तीन चक्र)
6.2	श्रमशक्ति आवश्यक प्रति चक्र (सं.)	::	11
6.3	कच्चे माल का स्रोत	::	घर से और अपने खेतों से
6.4	अन्य संसाधनों का स्रोत	::	मुक्त बाज़ार
	कच्चा माल - मात्रा		
6.5	प्रति चक्र आवश्यक (किग्रा)	::	1800 किलोग्राम प्रति चक्र
6.6	अपेक्षित उत्पादन प्रति	::	900 किलोग्राम प्रति चक्र

7. विपणन/बिक्री का विवरण

7.1	संभावित बाज़ार स्थान	::	हिमाचल प्रदेश वन विभाग . अपने खेत पर उपयोग करें
7.2	उत्पाद की मांग बाज़ार/बाज़ारों में	::	हिमाचल प्रदेश वन विभाग बड़े पैमाने पर वर्मी कम्पोस्ट की खरीद कर रहा है । अपनी नर्सरी के लिए खाद
7.3	पहचान की प्रक्रिया बाजार का	::	पीएमयू के गठजोड़ से सुविधा होगी खरीद का वर्मी –कम्पोस्ट विभाग द्वारा एसएचजी द्वारा उत्पादित । एसएचजी सदस्य भी इसका पता लगाएंगे
7.4	विपणन रणनीति उत्पाद		अतिरिक्त विपणन आस-पास के विकल्प अपने गांवों में बेहतर बिक्री मूल्य के लिए भविष्य ।
7.5	उत्पाद ब्रांडिंग		सीआईजी/एसएचजी स्तर पर उत्पाद होगा संबंधित ब्रांडिंग द्वारा विपणन किया गया सीआईजी/एसएचजी। बाद में इस आईजीए की आवश्यकता हो सकती है क्लस्टर स्तर पर ब्रांडिंग
7.6	उत्पाद “नारा”		"जैविक खेती"

8. स्वोट अनालिसिस

- **ताकत**
  - कुछ एसएचजी सदस्यों द्वारा पहले से ही गतिविधि की जा रही है
  - प्रत्येक स्वयं सहायता समूह के सदस्य के पास प्रत्येक घर में 2 से 8 तक मवेशी हैं
  - स्वयं सहायता समूह के सदस्यों के परिवार उच्च मूल्य वाली फसलों और सब्जियों की खेती कर रहे हैं, जिससे उन्हें पूरे वर्ष कच्चे माल यानी कृषि जैविक अपशिष्ट की पर्याप्त उपलब्धता मिलती है।
  - उनके खेतों पर कच्चा माल आसानी से उपलब्ध है
  - विनिर्माण प्रक्रिया सरल है
  - उचित पैकिंग और परिवहन में आसानी
  - परिवार के अन्य सदस्य भी लाभार्थियों का सहयोग करेंगे
  - उत्पाद का स्वयं-जीवन लंबा है
- **कमजोरी**
  - विनिर्माण प्रक्रिया/उत्पाद पर तापमान, आर्द्रता, नमी का प्रभाव।
  - तकनीकी जानकारी का अभाव
- **अवसर**
  - जैविक और प्राकृतिक खेती के प्रति किसानों में जागरूकता के कारण वर्मी -कम्पोस्ट की मांग बढ़ रही है
  - वर्मी -कम्पोस्ट का प्रयोग करने से मृदा स्वास्थ्य में सुधार होगा तथा गुणवत्तापूर्ण कृषि उपज का उत्पादन बढ़ेगा, जिससे बेहतर मूल्य मिलेगा।
  - रसोई से निकलने वाले घरेलू कचरे सहित जैविक कचरे का सर्वोत्तम उपयोग
  - एचपी फॉरेस्ट के साथ विपणन गठजोड़ की संभावना
- **खतरे/जोखिम**
  - अत्यधिक मौसम के कारण उत्पादन चक्र टूटने की संभावना
  - प्रतिस्पर्धी बाजार
  - प्रशिक्षण/क्षमता निर्माण एवं कौशल उन्नयन में भागीदारी के प्रति लाभार्थियों में प्रतिबद्धता का स्तर

9. सदस्यों के बीच प्रबंधन का विवरण

→ **उत्पादन** - कच्चे माल की खरीद सहित इसका ध्यान व्यक्तिगत सदस्यों द्वारा रखा जाएगा

→ **गुणवत्ता आश्वासन** – सामूहिक रूप से

→ **सफाई और पैकेजिंग** – सामूहिक रूप से

→ **विपणन** – सामूहिक रूप से

→ **इकाई की निगरानी** – सामूहिक रूप से

10. अर्थशास्त्र का विवरण

(वास्तविक राशि रु. में)

क्रमांक	विवरण	इकाइयों	संख्या.	(रु.)	वर्ष 1	वर्ष 2	वर्ष 3	वर्ष 4	वर्ष 5
एक।	पूंजीगत लागत								

ए.1	**गड्ढे का निर्माण और ओसारा**								
1	निर्माण के साथ-साथ श्रम लागत सहित शेड (आकार होगा 10 फीटX4 फीटX2 फीट)	प्रति सदस्य	11	7000	77000	0	0	0	0
2	कवर शेड का निर्माण लोहे के देवदूत के साथ	प्रति सदस्य	11	5000	55000				
	उप-योग (A.1)				**132000**	**0**	**0**	**0**	**0**
.2	**मशीनरी और उपकरण**								
3	औज़ार, उपकरण, तौल तराजू आदि	प्रति सदस्य	11	3000	33000	0	0	0	0
	उप-योग (A.2)				**33000**	**0**	**0**	**0**	**0**
	कुल पूंजीगत लागत (ए.1+ए.2)				**165000**	**0**	**0**	**0**	**0**
बी	**आवर्ती लागत**								
4	बीज केंचुआ	प्रति किलोग्राम	11	550	6050	0	0	0	0
5	खरीद की लागत घोल/गोबर/अपशिष्ट का	टन	66	1000	66000	69300	72765	76403	80223
6	श्रम लागत	प्रति टन	33	800	26400	27720	29106	30561	32389
7	पैकिंग सामग्री	नहीं।	11000	3	33000	34650	36382	38201	40111
8	अन्य हैंडलिंग प्रभार	प्रति टन	33	165	5445	5717	6003	6303	6618
सी	**अन्य शुल्क**								
9	बीमा	एल/एस			0	0	0	0	0
10	ऋण पर ब्याज	प्रति प्रतिवर्ष		2 प्रति प्रतिशत	2000	2000	2000	2000	2000
	कुल आवर्ती लागत				**138895**	**139387**	**146256**	**153468**	**161341**
	कुल लागत - पूंजी और आवर्ती				**303895**	**139387**	**146256**	**153468**	**161341**
डी	**वर्मी से आय खाद**								
11	**वर्मीकम्पोस्ट की बिक्री**	टन	33	**8000**	**264000**	**277200**	**291060**	**305613**	**320894**
12	**केंचुओं की बिक्री**					**20000**	**40000**	**40000**	**40000**
13	**कुल मुनाफा**				**264000**	**297200**	**331060**	**345613**	**360894**
14	शुद्ध रिटर्न (डीसी)				**125105**	**157813**	**184804**	**192145**	**199553**

नोट – चूंकि श्रम कार्य स्वयं सहायता समूह के सदस्यों द्वारा किया जाएगा और स्लरी/गोबर/अपशिष्ट उनके स्थान पर पहले से ही उपलब्ध है और इन सामग्रियों की खरीद उनके द्वारा नहीं की जाएगी, इसलिए आवर्ती

लागत (श्रम लागत, स्लरी/गोबर/अपशिष्ट की खरीद की लागत) को कुल आवर्ती लागत से घटाया जा

विवरण	वर्ष 1	वर्ष 2	वर्ष 3	वर्ष 4	वर्ष 5	
पूंजीगत लागत	**165000**	**0**	**0**	**0**	**0**	
आवर्ती लागत	**138895**	**139387**	**146256**	**153468**	**161341**	
कुल लागत	**138895**	**139387**	**146256**	**153468**	**161341**	**739347**
कुल लाभ	**264000**	**297200**	**331060**	**345613**	**360894**	**1598767**
शुद्ध लाभ	125105	157813	184804	192145	199553	859420
शुद्ध वर्तमान मूल्य लागत @15 प्रतिशत	**739347**					
शुद्ध वर्तमान मूल्य 15 प्रतिशत लाभ प्रतिशत	**1598767**					
लाभ लागत अनुपात	**2.16**					

सकता है।

आर्थिक विश्लेषण

शुद्ध लाभ का वितरण – उत्पादन में हिस्सेदारी के अनुसार।

11. आर्थिक विश्लेषण के निष्कर्ष

- प्रत्येक सदस्य के लिए गड्ढे का आकार 10X4X2 फीट निर्धारित किया गया है।
- वर्मी कम्पोस्ट के उत्पादन की लागत 4.2 रुपये प्रति किलोग्राम आती है
- वर्मी कम्पोस्ट (कंजरवेटिव साइड) की बिक्री 8 रुपये प्रति किलोग्राम है
- शुद्ध लाभ 3.8 रुपये प्रति किलोग्राम होगा
- यह प्रस्तावित है कि प्रत्येक सदस्य प्रति वर्ष 3 टन वर्मी -कम्पोस्ट का उत्पादन करेगा, जिसके परिणामस्वरूप एक वर्ष में स्वयं सहायता समूह के सभी 10 सदस्यों द्वारा 30 टन वर्मी -कम्पोस्ट का उत्पादन किया जाएगा।
- केंचुए की कीमत 550.00 रुपये प्रति किलोग्राम रखी गई है
- दूसरे वर्ष के बाद से , बिक्री के लिए अधिशेष मिट्टी का काम होगा (क्योंकि यह वर्मी -कम्पोस्ट के उत्पादन की प्रक्रिया के दौरान बढ़ जाएगा)
- वर्मी -कम्पोस्ट बनाना एक लाभदायक आईजीए है और इसे स्वयं सहायता समूह के सदस्यों द्वारा अपनाया जा सकता है।

12. निधि की आवश्यकता:

क्रम. नहीं।	विवरण	कुल राशि (रु.)	परियोजना सहायता	स्वयं सहायता समूह योगदान
1	कुल पूंजी लागत	165000	123750	41250
2	कुल आवर्ती लागत	138895	0	138895
3	प्रशिक्षण/ क्षमता निर्माण/ कौशल उन्नयन	50000	50000	0
	कुल =	353895	173750	180145

- **पूंजीगत लागत** - परियोजना के अंतर्गत पूंजीगत लागत का 75% कवर किया जाएगा
- **आवर्ती लागत** - एसएचजी/सीआईजी द्वारा वहन की जाएगी।
- **प्रशिक्षण/क्षमता निर्माण/कौशल उन्नयन** - परियोजना द्वारा वहन किया जाएगा

13. निधि के स्रोत:

परियोजना सहायता;	•पूंजीगत लागत का 75% हिस्सा होगा के निर्माण के लिए उपयोग किया जाएगा • गड्ढा (आकार 20ftX4ftX2ft होगा) •एक लाख रुपये तक का होगा मुआवजा एसएचजी बैंक में पार्क किया गया खाता । •प्रशिक्षण/क्षमता निर्माण/कौशल उन्नयन लागत ।	खरीद के लिए सामग्री गड्ढा/गड्ढे का निर्माण किया जाएगा संबंधि डीएमयू/एफसीसीयू द्वारा किया गया अनुसरण करने के बाद
स्वयं सहायता समूह योगदान	•पूंजीगत लागत का 25% जनित एसएचजी द्वारा, इसमें शामिल हैं लागत का शेड/निर्माण ओसारा । • आवर्ती लागत वहन करनी होगी SHG द्वारा	

14. बैंक ऋण चुकौती

यदि ऋण बैंक से लिया गया है तो यह नकद ऋण सीमा के रूप में होगा और सीसीएल के लिए कोई पुनर्भुगतान अनुसूची नहीं है; हालांकि, मासिक बचत और पुनर्भुगतान
प्राप्त रसीद सीसीएल के माध्यम से भेजी जानी चाहिए।

- सीसीएल में, एसएचजी के बकाया मूल ऋण का भुगतान वर्ष में एक बार बैंकों को किया जाना चाहिए। ब्याज राशि का भुगतान मासिक आधार पर किया जाना चाहिए।
- सावधि ऋणों में, पुनर्भुगतान बैंकों में निर्धारित पुनर्भुगतान अनुसूची के अनुसार किया जाना चाहिए।

15. प्रशिक्षण/क्षमता निर्माण/कौशल उन्नयन

प्रशिक्षण/क्षमता निर्माण/कौशल उन्नयन की लागत परियोजना द्वारा वहन की जाएगी।

निम्नलिखित कुछ प्रशिक्षण/क्षमता निर्माण/कौशल उन्नयन प्रस्तावित/आवश्यक हैं:

- परियोजना अभिमुखीकरण समूह गठन/पुनर्गठन
- समूह अवधारणा और प्रबंधन
- आईजीए का परिचय (सामान्य)
- विपणन और व्यवसाय योजना विकास
- बैंक ऋण लिंकेज एवं उद्यम विकास
- एसएचजी/सीआईजी का एक्सपोजर दौरा – राज्य के भीतर और राज्य के बाहर

16. निगरानी तंत्र

- वीएफडीएस की सामाजिक लेखा परीक्षा समिति आईजीए की प्रगति और निष्पादन की निगरानी करेगी तथा प्रक्षेपण के अनुसार इकाई का संचालन सुनिश्चित करने के लिए आवश्यकता पड़ने पर सुधारात्मक कार्रवाई का सुझाव देगी।
- स्वयं सहायता समूह को प्रत्येक सदस्य की आईजीए की प्रगति और निष्पादन की भी समीक्षा करनी चाहिए तथा यदि आवश्यक हो तो सुधारात्मक कार्रवाई का सुझाव देना चाहिए ताकि इकाई का संचालन अनुमान के अनुसार सुनिश्चित हो सके।

परियोजना की कुल लागत

मुर्गीपालन-

पूंजीगत लागत-320000/-

आवर्ती लागत-127100/-

वर्मी कम्पोस्ट की कुल लागत – 447100/-

वर्मीकम्पोस्टिंग -

पूंजीगत लागत-165000/-

आवर्ती लागत-138895/-

वर्मी कम्पोस्ट की कुल लागत – 303895/-

बिजनेस प्लान की कुल लागत- 750995/-

क्रमांक	**व्यापार का योजना**	**पूंजीगत लागत**	**आवर्ती लागत**	**परियोजना योगदान**	**लाभार्थी अंशदान**	**कुल लागत**
1	मुर्गीपालन	320000	127100	240000	207100	447100
2	वर्मी कम्पोस्ट	**165000**	**138895**	**123750**	**180145**	303895/-
	कुल	**485000/-**	**265995/-**	**363750/-**	**387245/-**	**750995/-**

12. Remarks

Group members Photos-

(Approval letter) (Falothu)
मागनी माता

Kanchan Kumar
Signature of VFDs Pradhan

Signature of VFDs Secretary

Santosh
Signature of SHG Pradhan

Anubala
Signature of SHG Secretary

HC Faloon Beat
Signature of Forest Guard

BU
Signature of B.O

Signature of R.O

Range forest officer
Dharamshala range
Dharamshala forest division

Divisional Forest Officer
Forest Division
Dharamshala

Approved by DMU